अनादि अनिधन

"जिनागम पंथ जयवंत हो"

खूबसूरत लाइनें

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

आचार्य भगवन्
पूज्यपाद स्वामी जी

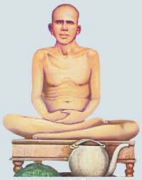

चारित्र चक्रवर्ती मुनि कुञ्जर
आचार्य श्री 108 आदिसागर जी महामुनिराज

तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट
आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी महामुनिराज

वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महामुनिराज

तपस्वी सम्राट आचार्य
श्री 108 सन्मतिसागर जी महामुनिराज

'जिनागम पंथ' अनुगामी वंदनीय आचार्य परम्परा

मंगलं भगवान् अर्हन्, मंगलं वृषभो जिनः।
मंगलं पूज्यपादार्यो, जिनागम पंथोस्तु तं।।

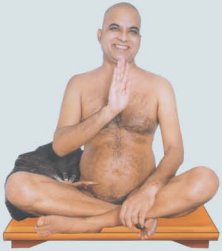

परम पूज्य युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, शुद्धोपयोगी संत
सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज

प.पू. जिनागम पंथ प्रवर्तक, अहार जी के छोटे बाबा, आदर्श महाकवि, राष्ट्रयोगी
भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रन्थांक-14

(स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव वर्ष-2022-23 की मंगल प्रस्तुति)

खूबसूरत लाइनें

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जिनागम पंथ प्रकाशन

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रन्थांक - 14

कृति : खूबसूरत लाइनें

शुभाशीष : प.पू. शुद्धोपयोगी संत, सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज

कृतिकार : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

समावलोकन : श्रमण विचिन्त्यसागर

प्रस्तुति : बा.ब्र. विशु दीदी

प्रकाशक : जिनागम पंथ ग्रंथमाला

संस्करण : 15 नवम्बर 2022 (वी.नि.सं. 2549)

द्वितीयावृति : 1000 प्रतियाँ

मुद्रक : अरिहंत ग्रॉफिक्स, दिल्ली मो. 9958819046

© जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन

प्राप्ति स्थान :

जिनागम पंथ ग्रंथालय
छिंदवाड़ा (म.प्र.) मो. 9425146667

जिनागम पंथ ग्रंथालय
श्री महावीर दि. जैन मंदिर, श्रमणपुर, लखनादौन (म.प्र.)
मो. 9425146667

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच
भिण्ड (म.प्र.) मो. 9826217291

जिनागम पंथ ग्रंथालय
डॉ. विश्वजीत कोटिया
आगरा (उ.प्र.) मो. 9412163166

जिनागम पंथ ग्रंथालय
अरिंजय जैन, दिल्ली मो. 9810099002

जिनागम पंथ ग्रंथालय
बड़ा जैन मंदिर, बाराबंकी (उ.प्र.)
नमन जैन मो. 9160855511

परिचय की वीथिकाओं में

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	–	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	–	पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ)
माता	–	श्रीमती भगवती जैन (आपके ही करकमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू. आर्यिका विहान्तश्री माताजी)
जन्म स्थान	–	जतारा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	–	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	–	15 नवम्बर 1973, दिन – गुरुवार
शिक्षा	–	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	–	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनि	–	दो (अग्रजा–श्रीमती कमला जैन, अनुजा–बा.ब्र. महिमा दीदी (संघस्थ)
विवाह	–	बाल ब्रह्मचारी
खेल	–	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता – दोनों खेल जिनसे सीखें उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)

सामाजिक सेवा – मंत्री – श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि – अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि – अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणाभाव – बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यन्त प्रभावित किया। (सन्–1995, स्थान–मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार : आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलू, प्याज एवं रात्रिभोजन के त्याग से गृहत्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत : आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा : आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान–क्षेत्रपाल जी, ललितपुर (उ.प्र.) दिनांक 3 अगस्त, सन्–1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा : फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा : पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित : आचार्यश्री विरागसागरजी ने 13 फरवरी 2005 रविवार को कुन्थुगिरी क्षेत्र पर गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर महाराज सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छियों के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार : मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, सं. 2067, रविवार, दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा राजस्थान में आचार्य श्री विरागसागर जी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

शान्ति भक्ति की सिद्धि : 25 दिसम्बर 2015, सिद्धक्षेत्र अहार जी में भगवान् श्री शान्तिनाथ स्वामी के अतिशयकारी पादमूल में, संघस्थ बा.ब्र. विशु दीदी की असाध्य बीमारी (रोग) से करुणान्वित हो पूज्य गुरुदेव ने जब लगभग 1400 वर्ष प्राचीन आचार्य पूज्यपाद स्वामी रचित शान्त्यष्टक का भावपूर्वक पाठ किया तो देखते ही देखते क्षणमात्र में दीदी असाध्य रोग से मुक्त हो गईं। तब क्षेत्र के यक्ष-यक्षणियों द्वारा गुरुदेव की महापूजा

की गई और सूचित किया कि आपको अपनी निर्मल साधना से इस पंचमकाल में दुर्लभतम शान्ति भक्ति की सहज ही सिद्धि प्राप्त हुई है। साथ ही पूज्य गुरुदेव को **'भावलिंगी संत', 'आहार जी के छोटे बाबा', 'शान्तिप्रभु के लघुनन्दन'** आदि संज्ञायें प्रदान कीं।

शब्दालंकार : रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक-एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महामुनिराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है। फिर भी जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरुचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि : संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरुवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरु परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है। वर्षायोग 2008 के उपरान्त उत्तर प्रदेश के आगरा नगर में पंचकल्याण क के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको **''वात्सल्य शिरोमणि''** के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव : पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महाराज की अनुशासन के सुडौल साँचे में ढली निर्दोष श्रमणचर्या वर्तमान में सम्पूर्ण श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा-वर्षायोग 2009 में शाकाहार परिषद एटा ने आपको **''श्रमण गौरव''** की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु : वात्सल्य और करुणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरुवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्यश्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरुवर को **''वात्सल्य सिन्धु''** का भाववंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव : संत, पंथ और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से 'असम्पृक्त' पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु 'जिनागम' का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जतारा जैन समाज ने पंचकल्याणक 2012 के अवसर पर आपको **''आचार्य पुंगव''** की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी : पूज्य गुरुवर का ''वैचारिक वैभव'' सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अतः विजयनगर वर्षायोग में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित दिव्य संस्कार प्रवचन माला में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको **''राष्ट्रयोगी''** का अलंकार समर्पित किया गया।

सर्वोदयी संत : पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जन मानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ-साथ अजैन

भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है। तभी तो विजयनगर दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको **''सर्वोदयी संत''** की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी : श्रुताराधना के अनुपम आराधक-जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी और कलम के अनूठे जादूगर पूज्य श्री की तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन विजयनगर-2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा आपको **''प्रज्ञामनीषी''** की उपाधि से भूषित कर मान बढ़ाया।

राष्ट्रहितैषी : उत्तरप्रदेश के एटा नगर में स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के राष्ट्रहित में समर्पित देशोन्नति परक अमूल्य चिंतन से प्रभावित हो विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सन् 2013 में आपको **''राष्ट्रहितैषी''** अलंकरण से अलंकृत किया गया।

आदर्श महाकवि : सम्प्रतिकाल में कुरल शैली का सैकड़ों विषयों को हृदयंगम करनेवाला अमर महाकाव्य ''जीवन है पानी की बूँद'' के शब्दशिल्पी, भजन, ग़ज़ल, मुक्तक, कविता, नई कविता, पद्यानुवाद, सवैया आदि अनेक जटिल विधाओं पर साधिकार कलम चलानेवाले परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के अपूर्व काव्यात्मक अवदान से प्रेरित हो, 14 नवम्बर 2016 को अखिल भारतीय आधयात्मिक कवि

सम्मेलन में, देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य कवियों ने सुरेश 'पराग' के नेतृत्व में एवं पं. संकेत जी के मार्गदर्शन में सकल जैन समाज देवेन्द्रनगर की गरिमामयी अनुमोदना के संग पूज्यश्री को **''आदर्श महाकवि''** का अलंकरण भेंट कर निज सौभाग्य वर्धन किया।

चारित्ररथी : आत्मप्रदेशों में सच्चे भावलिंग की प्रतिष्ठा कर, आत्मरति और परविरति के साथ चारित्र रथ पर सवार हो पूज्य गुरुदेव आत्मोत्थान के सुपथ पर अबाध रीति से वर्धमान हैं। आपकी इस आत्मोन्नयन की निष्पंक चारित्र साधना से प्रभावित हो देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश 'सरल' जी ने बिजयनगर चातुर्मास 2012 में आपको **'चारित्र रथी'** का अलंकरण भेंट कर स्व गौरववर्धन किया।

जिनागम पंथ प्रवर्तक : वर्तमान में पंथवाद, संतवाद और जातिवाद के नाम पर बिखरती दिगम्बर जैन समाज में अनादि अनिधन **''जिनागम पंथ''** का उद्घोष कर पूज्य गुरुदेव ने जैन एकता के लिये एक महनीय कार्य किया है। पूज्य आचार्य भगवन् के इस **''जैन यूनिटी मिशन''** से प्रभावित हो सन् 2020 में श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं गजरथ महोत्सव के सुप्रसंग पर बा.ब्र. ऋषभ भैया (नागपुर) के मार्गदर्शन में सकल दिगम्बर जैन समाज, बाराबंकी ने आपको **''जिनागम पंथ प्रवर्तक''** का अलंकरण भेंट कर आपके इस अभिनंद्य प्रयास की अभ्यर्थना की।

राष्ट्रगौरव : परम पूज्य भावलिंगी संत राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज का अनुत्तम वैदुष्य जहाँ एक ओर धर्मनीति की प्रतिष्ठा करता है वहीं दूसरी

ओर आपका क्रान्तिनिष्ठ मौलिक चिंतन, राजनीति, न्याय-नीति, मानव सेवा, शाकाहार, गौरक्षा, लोकतंत्र, पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों के प्रति जन जागरण कर संपूर्ण देश के लिये गौरव का विषय बन पड़ा है। पूज्य गुरुदेव के दिव्यावदानों से आज समुचा देश गौरवान्वित है। इसीलिये महमूदाबाद चातुर्मास 2021 में सम्पूर्ण अवध प्रान्त की जैन समाज की गरिमामयी उपस्थिति में कला और साहित्य की अखिल भारतीय संस्था एवं **''राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ''** के अनुसांगिक संगठन **''संस्कार भारती''** की ओर से माननीय श्री गिरीशचन्द्र मिश्र, राज्यमंत्री, उत्तरप्रदेश शासन द्वारा पूज्य गुरुदेव को **''राष्ट्रगौरव''** का अलंकरण भेंट किया गया।

साहित्यिक यात्रा

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज सौम्यवदन, गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य पाठ संग्रह :

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. मानतुंग के मोती
3. विमर्शांजलि (पूजा पाठ संग्रह)
4. गीताञ्जलि (भजन)

5. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
6. जीवन है पानी की बूँद (भाग-1)
7. जीवन है पानी की बूँद (भाग-2)
8. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
9. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
10. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
11. समर्पण के स्वर (काव्य)
12. आइना (काव्य)
13. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
14. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
15. वाह! क्या खूब कही (काव्य)
16. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
17. आओ सीखें जिनस्तोत्र
18. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)

प्रवचन साहित्य :

1. रयणोदय (प्रथम भाग)
2. रयणोदय (द्वितीय भाग)
3. रयणोदय (तृतीय भाग)
4. रयणोदय (चतुर्थ भाग)
5. रयणोदय (पंचम भाग)
6. योगोदय (प्रथम भाग)
7. योगोदय (द्वितीय भाग)
8. उपासकोदय (प्रथम भाग)
9. उपासकोदय (द्वितीय भाग)
10. देशव्रतोदय
11. साम्योदय (प्रथम भाग)
12. साम्योदय (द्वितीय भाग)
13. रत्नोदय (प्रथम भाग)
14. ज्ञानोदय
15. इष्टोदय (प्रथम भाग)
16. इष्टोदय (द्वितीय भाग)

17. गूँगी चीख
18. भरत जी घर में वैरागी
19. शब्द शब्द अमृत
20. शंका की एक रात

प्रेरक साहित्य :

1. जनवरी विमर्श
2. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
3. विमर्श हस्ताक्षर

ग़ज़ल संग्रह : ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

1. आचार्य विरागसागर विधान
2. श्री एकीभाव विधान
3. श्री भक्तामर विधान (3)
4. श्री विषापहार विधान
5. श्री कल्याण मंदिर विधान
6. श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा :

गणधर चालीसा

टीका :

योगसार प्राभृत ग्रंथ पर :

1. अप्पोदया (प्राकृत टीका)
2. आत्मोदया (हिन्दी टीका)

महाकाव्य :

''जीवन है पानी की बूँद'' (महाकाव्य) : पूज्य गुरुदेव इस अमर महाकाव्य के मूल रचयिता हैं। पूज्यश्री के इस बहुचर्चित महाकाव्य पर अनेकों साधु-भगवंत, विद्वान् एवं संगीतकार बहुसंख्या में नवीन छंदों का सृजन कर अपनी काव्य प्रतिभा को धन्य कर रहे हैं, जो इस महाकाव्य की लोकप्रियता का अनुपम उदाहरण है।

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

भाषा : विमर्श एम्बिसा

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभू स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पंचमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र
14. रयणसार
15. योगसार
16. उपासक संस्कार
17. देशव्रतोद्योतन
18. ज्ञानांकुश

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-आचार्य विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्त्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय – राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

आचार्य विरागसागर ग्रन्थमाला

जिनागम पंथ ग्रंथमाला

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन
प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक –आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. समसामयिक राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)
7. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (छिंदवाड़ा -2018)।
8. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत 'ज़ाहिद की ग़ज़लें' कृति पर साहित्यकार सम्मेलन (छिंदवाड़ा-2018)
9. आचार्यश्री विमर्शसागर जी कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (दुर्ग-2019)।

आनन्द महोत्सव (पूजन प्रशिक्षण शिविर) : आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित 'आनन्द महोत्सव' एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने

मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 24 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं–

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोकनगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. बिजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
20. जबलपुर (म.प्र.)
21. लखनादौन (म.प्र.)
22. छिंदवाड़ा (म.प्र.)
23. दुर्ग (छत्तीसगढ़)
24. फतेहपुर (उ.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस, सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक, रथ महोत्सव-2004 (बूँदी, राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, कोटा ,राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव-2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2018 (धनौरा, म.प्र.)
15. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, रथ महोत्सव-2021 (महमूदाबाद, उ.प्र.)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.) – 1996
2. भिण्ड (म.प्र.) – 1997
3. भिण्ड (म.प्र.) – 1998
4. भिण्ड (म.प्र.) – 1999
5. महरौनी (उ.प्र.) – 2000
6. अंकुर कॉलोनी (सागर, म.प्र.) – 2001
7. सतना (म.प्र.) – 2002
8. अशोकनगर (म.प्र.) – 2003
9. रामगंजमण्डी (राज.) – 2004
10. सिंगोली (म.प्र.) – 2005
11. कोटा (राज.) – 2006
12. शिवपुरी (म.प्र.) – 2007
13. आगरा (उ.प्र.) – 2008
14. एटा (उ.प्र.) – 2009
15. डूंगरपुर (राज.) – 2010
16. अशोकनगर (म.प्र.) – 2011
17. बिजयनगर (राज.) – 2012
18. भिण्ड (म.प्र.) – 2013
19. बड़ौत (उ.प्र.) – 2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.) – 2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.) – 2016
22. जबलपुर (म.प्र.) – 2017
23. छिंदवाड़ा (म.प्र.) – 2018
24. दुर्ग (छत्तीसगढ़) – 2019
25. बाराबंकी (उ.प्र.) – 2020
26. महमूदाबाद (उ.प्र.) – 2021
27. कविनगर (गाजियाबाद) – 2022

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिन. के पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती है। कम-बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी आचार्यश्री पंथ-संत-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करनेवाले आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देने वाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार्य परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है। आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहिचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

श्रमण विचिन्त्यसागर
(संघस्थ)

आचार्य श्री का साधिक 5000 छन्दों में निबद्ध बहुचर्चित महाकाव्य

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे - ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-2, कब क्या घट जाये रे ऽऽ
साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा।
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा।।
ख्वाबों में तू क्यों, हो-हो-2, आनन्द मनाये रे ऽऽ
अर्द्धमृतक समवृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न-सिकुड़न।
गोदी में पोता-पोती, खोज रहा बचपन यौवन।।
बीते जीवन के, हो-हो-2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी।
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी॥
बेटा बहू सोचें, हो हो-2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी-बेटा है।
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है॥
भूखा प्यासा ही, हो-हो ऽ इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य-पाप की करवट में।
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में॥
तेरा ही बेटा, हो-हो-2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है।
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है॥
तेरा ही बेटा, हो-हो-2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है।
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है॥
देहरी से बाहर, हो-हो 2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

जानें, क्या है जिनागम पंथ?

● **श्रमणाचार्य विमर्शसागर**

'जिनागम पंथ' अनादि-अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत, केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य उपाध्याय निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो ! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो ! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है और जिनागम में कथित श्रमणश्रावकधर्म, यह पंथ अर्थात् मार्ग है। जो श्रमण श्रावक धर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि, श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो ! विदेह क्षेत्र में विराजित विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात् जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग-द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो ! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागमपंथो, रागोदोसो य णासगो सेयो।
पंथो तेरह बीसो, रागादि वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करनेवाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरहपंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ानेवाले हैं, अकल्याणकारी हैं।

अहो ! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरह पंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर राग-द्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति-पूजा-लाभ के लिए नये-नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान अहित किया है।

अहो ! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं और कल्पित पंथों का पोषण कर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह-बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में रागद्वेष का कारण

बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह-बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री-प्रेम-वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो ! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी, जिनागम में श्रद्धा रखें, और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के राग-द्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

'जयदु जिणागम पंथो।'

'जिनागम पंथ जयवंत हो।'

खूबसूरत लाइनें

स्वर्णिम विमर्श उत्सव
आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज
२०२२
२०२३
भावलिंगी संत
रजत संयमोत्सव

बाहें

अँधेरों में जो रहते हैं न मिलती हैं उन्हें राहें।
जो काँटों पर चला करते उन्हें मिलती सदा आहें।
अगर पाना तुम्हें खुशियाँ तो राहें अब बदल डालो।
बढ़ाओ हाथ अपना तुम उठेंगी हर तरफ बाहें।

बदल जाते

अगर नज़रें बदल जाती नज़ारे[1] भी बदल जाते।
कई मासूम से चेहरे अरे खुद ही बहल जाते।
न करना तुम कभी अपनी नज़र में ख़ौफ[2] को पैदा।
हवायें रुख बदल देती तो तूफाँ भी बदल जाते॥

1. दृश्य 2. भय

हमदर्द

मिटाना चाहते हो दर्द तो अब मर्द बन जाओ।
बुझाना चाहते हो आग तो अब सर्द बन जाओ।
धड़कते दिल में अब कुछ प्रेम की धड़कन करो पैदा।
बनाना चाहते अपना तो अब हमदर्द न जाओ।

सच्चाई

लरज़ते[1] होंठ से अपनी कहानी सब सुनाते हैं।
गरजते बादलों में भी जवानी सब दिखाते हैं।
महकते जिस्म की सच्चाई को न जानता कोई।
वर्क चाँदी का गोबर की मिठाई पर चढ़ाते हैं।

1. काँपते

ज़िंदगी

अरे क्यों जुल्म का साया यहाँ ईजाद[1] करते हो।
अरे क्यों ज़िंदगी अपनी स्वयं बरबाद करते हो।
मुहब्बत से बड़ी न ज़िंदगी की दासताँ कोई।
हकीकत[2] जानकर क्यों ज़िंदगी नाशाद[3] करते हो।

1. आविष्कार 2. सच्चाई 3. बरबाद

किस्मत

मेरी किस्मत ही अच्छी थी जो मैंने आँख पाई है।
कि नंगी सभ्यता में भी तहेदिल-साख[1] पाई है।
यहाँ मर करके जिंदा रहना तो हमने ही सीखा है।
हजारों लोगों ने मरकर यहाँ बस राख पाई है।

1. हृदय से इज्जत

जवानी

अरे किसके लिये जीते हो इस दुनिया की बस्ती में?
सभी मुर्दे हैं क्यों जीते हो इस फैशनपरस्ती[1] में?
यहाँ हर कब्र से हरदम यही आवाज आती है।
जवानी चार दिन की है जिओ मत मटरगश्ती में।

1. फैशन की पूजा

मुर्दे

यहाँ जिसको भी लूटा है वो लूटा है बहारों ने।
यहाँ जितनी लुटी डोली वो लूटी हैं कहारों ने।
जिसे कहते मुहब्बत तुम मैं कहता हूँ दगा उसको।
सुनो आवाज मुर्दे कह रहे बैठे मजारों[1] में।

1. कब्रों

खुदा की रोशनी

ज़राफत[1] की अरे क्यों ज़िंदगी जीते यहाँ आकर।
शराफ़त[2] सीख लो खुशियाँ मिलेंगी हर कदम जाकर।
प्रभु की इल्तिजा[3] से खुद को तुम महरूम[4] मत करना।
नहीं तो पाओगे दोज़ख[5] खुदा की रोशनी पाकर।

1. मजाक 2. सज्जनता 3. प्रार्थना 4. वंचित 5. नरक

शहर के लोग

शहर के लोग बाहर से बड़े मासूम लगते हैं।
मगर दो पल की खुशियों से हमें महरूम[1] लगते हैं।
सुबह से साँझ क्या हर रात ही इनकी अजब होती।
है जीवन में भी सुख इनको नहीं मालूम लगते हैं।

1. वंचित

अदायें

अदायें देखते ही बनती हैं बच्चों की भी अब तो।
इन्हैं शादी में जाना चिन्ता है मैचिंग की भी अब तो।
लिपिस्टिक, नेलपालिस, क्रीम, पावडर सब अलग अपना।
है लगता बचपना में भी जवानी आ गई अब तो

बेपरदा

अरे वस्त्रों में रहकर के भी बेपरदा[1] हुआ है तन।
दिखावे से मोहब्बत कर रहा है आदमी का मन।
दुहाई दे रही है सभ्यता की आज ये दुनिया।
बचा ही क्या है अब ऐसा जिसे कहते हो तुम जीवन।

1. पर्दा रहित

चेहरा

सभी दर्पण में चेहरा देखकर खुशियाँ मनाते हैं।
परिन्दे देखकर सूरज को जैसे चहचहाते हैं।
मगर चेहरे की रौनक चार दिन की जानता है जो।
बिना दर्पण के भी वो अपना चेहरा जान जाते हैं।

दान

भला करके किसी का कौन सा अहसान करते हो।
अरे अपनी भलाई का नया इंतजाम करते हो।
ख़ज़ाने भरते जाते हैं कभी भी कम नहीं होते।
ख़ज़ाने से अगर थोड़ा सा भी तुम दान करते हो।

दीपक

मिलाना है तो अपनी आँख को प्रभु से मिला लेना।
खिलाना है तो अपनी ज़िंदगी प्रभु सी खिला लेना।
जलाने को तो दुनिया में सभी दिल को जलाते हैं।
जलाना है तो सम्यग्ज्ञान का दीपक जला लेना।

गुरु

गुरु के कदमों की आहट का भी अहसास है जिनको।
धड़कती साँस से ज्यादा कहीं विश्वास है जिनको।
जला करते हैं गुरु के दिल में वो बनकर दिया[1] हरदम।
प्रभु के बाद गुरु ही ज़िंदगी में खास हैं जिनको।

1. दीपक

सीखो

अगर करना तुम्हें आराम तो फिर लेटना सीखो।
खुशी भरना है तो फिर पाप को भी मेंटना सीखो।
जो बैठे रहते हैं साहिल[1] पे वो पाते नहीं मंज़िल।
अगर तिरना है तो किश्ती में जाकर बैठना सीखो।

1. किनारे

जीना

तसव्वर[1] ही तसव्वर में कोई जीने के आदी हैं।
लतीफों जैसा जीवन जी रहे जितने प्रमादी हैं।
न खुद की फ्रिक है इनको न चिंता है जमाने की।
मुझे लगता कोई नेता पहनकर आये खादी हैं।

1. कल्पना

तरक्की

तरक्की कर रहे हैं लोग अपनी इस जमाने में।
नहीं बच्चों की कोई फ़िक्र कुत्ते को खिलाने में।
लगी है नौकरानी जो घुमाती रोज बच्चों को।
लगे हैं लोग कुत्ते को सुबह टॉयलेट कराने में।

बच्चे

ये बच्चे फूल जैसे हैं सँभालो इनको आहिस्ता।
अगर ईश्वर से मिलना है बना लो बच्चों से रिश्ता।
न इनमें लोभ है न छल कपट दिखता कभी इनमें।
सरलता का नमूना दुनिया में इनसे नहीं सस्ता।

चिड़िया

हमें जीना सिखाती है सुबह आती हुई चिड़िया।
नये अनुभव सुनाती है सुबह आती हुई चिड़िया।
अगर जीना है दुनिया में करो हरदम परिश्रम तुम।
परिश्रम कर दिखाती है सुबह आती हुई चिड़िया।

पहिचान

न देखो गैर के चेहरे इन्हैं न जान पाओगे।
यहाँ चेहरे पे चेहरे हैं न तुम पहिचान पाओगे।
जिन्हैं तुम आदमी कहते वो लगते है हमें गिरगिट।
बदलते रंग जो अपना क्या तुम इन्सान पाओगे?

मेरा दिल

जमाने में जहाँ देखो वहाँ दिलकश[1] नज़ारे हैं।
कहीं सूरज कहीं चन्दा कहीं दिखते सितारे हैं।
मगर रब आप सी सूरत न देखी हमने दुनियाँ में।
मेरा दिल कह रहा हर पल मेरे रब हम तुम्हारे हैं।

1. आकर्षक

शुभ कर्म

कोई काँटों पे चलता है कोई फूलों पे चलता है।
करम जैसा किया जिसने उसे फल वैसा मिलता है।
अगर फूलों पे चलना है करम अच्छा करो हरदम।
अरे शुभ कर्म से तो भाग्य भी सबका बदलता है।

रँगीनियाँ

अरे इक दिन यहाँ सबकी मुहब्बत टूट जायेगी।
जिसे कहते हो तुम किस्मत वो किस्मत फूट जायेगी।
बड़ी रंगीनियाँ हैं इस जमाने में जहाँ देखो।
तेरी रंगीन दुनिया तुझसे इक दिन रूठ जायेगी।

लुटेरे

यहाँ दुनिया में तो हर पल गुलामी की हैं सब बातें।
गुलामी में निकलते दिन गुलामी में यहाँ रातें।
जिन्हें कहते हो तुम अपना लुटेरे हैं वो दुनियाँ के।
कभी न बाज आयेंगे वो देने से तुम्हें लातें।

ख़िदमत

मेरे यारब मेरी ख़िदमत[1] तुझे मंजूर हो जाये।
तो हर मनहूस[2] परछाई भी मुझसे दूर हो जाये।
मुकम्मल[3] हो जमाने को अमन[4] का रास्ता हरदम।
तो बन्दे की फकीरी भी यहाँ मशहूर हो जाये।

1. सेवा 2. अशुभ 3. पूर्ण 4. चैन

याद

वतन की याद जिस दिल में कभी आती नहीं होगी।
वो मिट्टी का दिया होगा मगर बाती नहीं होगी।
मैं बच्चा था पिताजी लाये थे कोयल जो मिट्टी की।
समझ से कह दिया कोयल कभी गाती नहीं होगी।

आरजू

दरख़्तों[1] में लगे पत्ते इबारत लिख रहे इतनी।
है दिल में प्रेम हरियाली इबादत[2] करलो हो जितनी।
अरे जब प्रेम हरियाली कर्मवश सूख जायेगी।
हवायें ले उड़ेंगीं संग हो दिल में आरजू कितनी।

1. वृक्षों 2. पूजा

प्रेम का पौधा

हों जंजीरें भले मजबूत इक दिन टूट जायेंगीं।
हिलोरें आयेंगीं जल में दीवारें फूट जायेंगीं।
हृदय में प्रेम का पौधा लगाकर के तो तुम देखो।
बहारें खुद ही आयेंगीं ख़िजा को लूट जायेंगीं।

शहर के लोग

शहर के लोग मेरे दोस्त बनकर घर पे आये थे।
मधुर संबंध हों जैसे वो ऐसे मुस्कुराये थे।
मगर वो जब गये घर से तो मैं बरबाद था साईं।
मेरे सब सूत्र सी.बी.आई. को उनने बताये थे।

खोटा कर्म

है खोटा कर्म फल क्या? पूछ लो जाकर भिखारी से।
है खोटी शर्म क्या? यह पूछ लो दुश्शील नारी से।
जो सिक्के खोटे उनका हस्र क्या देखो बाजारों में।
जो करते कर्म खोटे नर्क में कटते हैं आरी से।

मत होना

अगर हों चार पैसे हाथ में मग़रूर[1] मत होना।
हो दुनिया दूर चाहे तुम खुदा से दूर मत होना।
लकीरों पे भरोसा करना है सबसे बुरी आदत।
अरे पुरुषार्थ करने में कभी मग़फूर[2] मत होना

1. अभिमानी 2. मृत, स्वर्गीय

पाते हैं

नदी बनकर जो बहते हैं वही मंज़िल को पाते हैं।
जो करते प्रेम प्रभु तुमसे वो दिल में दिल को पाते हैं।
जो घुटने टेक कर बैठे हैं उनसे इतना कहना है।
लगाते वृक्ष जो घर में वो छाया, फल को पाते हैं।

मत भूलो

हँसो, हँसते रहो हरदम मगर रोना भी मत भूलो।
चलो, चलते रहो हरदम मगर सोना भी मत भूलो।
न जाने किस घड़ी रोना पड़े तुमको यहाँ प्यारे।
है इक नन्हीं कली सी ज़िंदगी इतना भी मत फूलो।

गनीमत है

गनीमत है शहर वाले जो मुझको याद करते हैं।
कभी फिर से भी हो मिलना वो यह फरियाद करते हैं।
नहीं तो शहरों में किसको है फुर्सत याद करने की।
अरे अपने ही बीवी बच्चों को नाशाद[1] करते हैं।

1. नाशाद

करिश्मा

यहाँ कुछ लोग तो साईं करिशमा खूब करते हैं।
छतों से कूदते नीचे मगर फिर भी न मरते हैं।
पहलवानों को भी देखा विजय का बाँधते सेहरा।
मगर वे अपने घर के ही कभी चूहों से डरते हैं।

राहत

लकीरें पीटते रहना नहीं है यह मेरी आदत।
इसी से हो रही है आज मानव सभ्यता आहत।
करो कुछ काम ऐसे ज़िंदगी में अब मेरे साईं।
जो मानव सभ्यता को दे सके महावीर सी राहत।

बदलो

बदलते युग में अब अपनी पुरानी आदतें बदलो।
नई खूबी करो पैदा पुरानी चाहतें बदलो।
कशिश ऐसी रहे दिल में कि कोशिश काम आ जाये।
अहिंसा के लिए चाहे कुराँ की आयतें बदलो।

तुम

अरे कब तक यहाँ बोलोगे ग़ैरों की जुबाँ से तुम।
अरे कब तक यहाँ घोलोगे विष अपनी जुबाँ से तुम।
सुरक्षा प्रेम की करलो न बढ़कर चीज़ दुनिया में।
अरे कब तक यहाँ खेलोगे अपनी ही जवाँ[1] से तुम।

1. जवानी

दिलजोई

जमाने को है अब दरकार[1] उसकी जो है दिलजोई[2]।
कि उसको देखकर मसरूर[3] हो हर आँख है रोई।
हो उसके नाम सारी ज़िंदगी जो कर रहा रहमत[4]।
अरे जो दिलज़दा[5] उसकी तमन्ना क्यों करे कोई।

1. आवश्यकता 2. किसी का दिल रखना
3. प्रसन्न 4. कृपा 5. दुःखी

इस जमाने में

किया करता है चिन्ता कौन किसकी इस जाने में।
महारत है यहाँ हासिल बहाने ही बनाने मे।
लिये कुछ नीर आँखों में तड़पकर मर गई बेटी।
नहीं सीझा पिता का दिल दवा उसको पिलाने में।

तकदीर

लगी चढ़ने दुपहरी जब हुई परछाईं भी छोटी।
बिलावा छीन ले जाता है देखो घास की रोटी।
रखा हो हाथ में हीरा मगर दिखता है वो माटी।
अरे जब आदमी की होती है तकदीर ही खोटी।

वारिश

मिलें खुशियाँ जमाने को करो ऐसी गुज़ारिश तुम।
अगर बनना है दुनिया में बनो यारब के वारिश[1] तुम।
जमाना अपनी पलकों पे तुम्हें हरपल बिठायेगा।
अगर बन जाओगे प्यासी जमीं को सिर्फ बारिश तुम।

1. उत्तराधिकारी

मेघ

जहाँ बरसात होती है उफनते हैं नदी-नाले।
भरे जो राह में गड्ढे वो लगते चाय के प्याले।
मयूरों का कहीं नर्तन फुदकती हैं कहीं चिड़ियाँ।
प्रकृति खुशहाल न रहती न आते मेघ जो काले।

चौखट

मेरे यारब तेरी चौखट मयस्सर[1] हो गई होती।
सितम की ज़िंदगी शायद मेरी भी खो गई होती।
नशा आनन्द का सिद्धों के जैसा छा गया होता।
मेरी सूरत तेरी सूरत के जैसी हो गई होती।

1. प्राप्त

श्रद्धा-अश्रद्धा

किसी ने पत्थरों के सामने सिर को झुकाया था।
किसी ने पत्थरों में भी प्रभु का दीद[1] पाया था।
प्रभु दिखते हैं श्रद्धा से, अश्रद्धा से दिखें पत्थर।
सभी ने अपनी श्रद्धा का दरश खुद में ही पाया था।

1. दर्शन

खुशियाँ

किसी को मिलती हैं खुशियाँ यहाँ जागीर को पाकर।
किसी को मिलती हैं खुशियाँ यहाँ अक्सीर[1] को पाकर।
मेरे यारब मेरी खुशियाँ अलग हैं दुनिया वालों से।
मुझे मिलती यहाँ खुशियाँ तेरी तस्वीर को पाकर।

1. दवा

रिश्तों का चलन

यहाँ रिश्तों की जाने क्यों दुहाई सब दिया करते।
जुदाई का यहाँ गम लोग जाने क्यों पिया करते।
ये रिश्तों का चलन केवल हुआ करता है मरघट तक।
सचाई जानकर भी लोग जाने क्यों जिया करते।

आँखें

तमाशा ज़िंदगी जिसकी है दिन क्या और क्या रातें।
है क्या व्यक्तित्व यह आदम[1], सहज मिलती हैं सौगातें।
किसी की नब्ज पर अब हाथ रखने की जरूरत क्या।
बयाँ करती हैं आँखें आदमी के दिल की सब बातें।

1. आदमी

घड़ी

घड़ी को बाँधकर रखते सभी अपनी कलाई पर।
नज़र पल-पल टिकाते, जैसे बच्चे भी मलाई पर।
घड़ी भर भी घड़ी की न सचाई जान पाते हैं।
न दिखती रूह[1] जब रहती नज़र मुख की ललाई पर।

1. आत्मा

मुर्दाघर

मकानों में सभी अपने अरे खिड़की बनाते हैं।
अगर गर्मी हो खिड़की बन्द तो झड़पी दिखाते हैं।
अगर खिड़की सी इक लड़की न हो घर में तो मुर्दाघर।
अरे क्यों लोग लड़की जन्म में कड़की दिखाते हैं।

धन

यहाँ सब लोग जीते हैं सदा धन की खुमारी में।
सदा खुशियाँ मनाते लोग धन की बेशुमारी में।
मगर जब तक करम का साथ है तब तक यहाँ खुशियाँ।
करम फूटा हुआ धन नाश या जाता बीमारी में।

हो गया होता

मुझे गर आइना दो पल मुनासिब[1] हो गया होता।
तो भीतर जो अहम् का मिर्ज़ागालिब खो गया होता।
बरसता नूर[2] ही बस नूर दिल में फिर मेरे यारब।
अरे मैं खुद स्वयं से ही मुख़ातिब[3] हो गया होता।

1. ठीक 2. प्रकाश 3. बोलने वाला

स्वप्न

यहाँ दुनियाँ में तो सबके अधूरे स्वप्न होते हैं।
कोई स्वप्नों में खोते हैं कोई स्वप्नों को रोते हैं।
अजूबा, लोग ज्यादा स्वप्न दिन में देखने वाले।
कोई महावीर जैसों के ही पूरे स्वप्न होते हैं।

चाहत

न अब हस्ती की चाहत है न अब बस्ती की चाहत है।
मेरे यारब मुझे तुझ जैसी अब मस्ती की चाहत है।
समन्दर को तिरा था आपने जिस बैठ कश्ती में।
मुझे दिन-रात अब यारब उसी कश्ती की चाहत है।

अर्थी

अगर लुटती मेरी दुनिया तो यारब आज लुट जाये।
तेरी भक्ति में अब मेरा जो दम घुटता तो घुट जाये।
न जाने आज तक कितनी सजी हैं अर्थियाँ मेरी।
तमन्ना है मेरी अर्थी की अर्थी आज उठ जाये।

स्वप्न की खुशबू

किसी ने स्वप्न की खुशबू मेरे दर पे लुटाई थी।
सुनाते वक्त स्वप्नों की दिवाली सी मनाई थी।
हुये रोमांचित इतने कि चेहरा हो गया गुल सा।
खुशी में आँख भी उनकी अरे कुछ छलछलाई थी।

क़ाबिल

अरे दिल तो है सबके पास पर दिल है बड़ा क़ातिल।
अगर दिल दूर है प्रभु से बनाता है अगर क़ाहिल[1]।
जमाने को नहीं खुद को भी देखो आजमाकर तुम।
किसी दुखिया की सेवा को हुये दिल से कभी क़ाबिल।

1. आलसी

दिल की सदा[1]

नहीं चलता किसी का काम ग़ैरों की वफाओं से।
नहीं मिलता कभी आराम गर्म लू की हवाओं से।
वफा का चैन क्या होता अगर चाहत तुम्हें साँई।
वफा मिल जायेगी तुमको सुनो दिल की सदाओं[2] से।

1. आवाज 2. आवाजों

खुशी घर में ही पाओगे

जमाने भर की बातों को करोगे कुछ न पाओगे।
जमाना तो जमाना है तुम अश्कों से नहाओगे।
अगर खुशियों की चाहत है तो मानो बात तुम मेरी।
न भटको तुम जमाने में खुशी घर में ही पाओगे।

बुरे दिन

वो पल में टूट जायेंगी जो हैं मिट्टी की दीवारें।
वो नावें डूब जायेंगीं नहीं हों साथ पतवारें।
बुरे दिन में किसी के काम आता न यहाँ कोई।
कि हमने देखी हैं गिरते कई मजबूत सरकारें।

संघर्ष

लगे हों फल दरख़्तों[1] में उन्हैं पत्थर सताते हैं।
वो खाके चोट पत्थर की धरम अपना निभाते हैं।
अगर दुनिया में जीना है तो संघर्षों को स्वीकारो।
जो संघर्षों में जीते हैं उन्हैं गम भी भुलाते हैं।

1. वृक्षों

इन्सानियत

लुटाना है तो जीवन की अरे खुशियाँ लुटाओ तुम।
उठाना है तो गिरते को सहारा दे उठाओ तुम।
है जो भूखा पड़ौसी तो उसे भोजन करा देना।
अगर इन्सान हो इन्सानियत अपनी दिखाओ तुम।

उन्हें सब याद करते हैं

जो प्रभु को प्यार करते हैं सदा दिल में बसाते हैं।
किसी रोते हुये बच्चे को आकर जो हँसाते हैं।
वो दुनियाँ में रहें चाहे या दुनियाँ से चले जायें।
उन्हें सब याद करते हैं नहीं दिल से भुलाते हैं।

दीदार

यहाँ इन्सान को इन्सान का दीदार[1] हो जाता।
तो समझो एक दिन भगवान से भी प्यार हो जाता।
नहीं इन्सान से भगवान का रस्ता यहाँ लम्बा।
हर इक इन्सान ही भगवान का हकदार हो जाता।

1. दर्शन

संस्कार

यहाँ इन्सान की तस्वीर जो दिल में लगायेगा।
बदलते संस्कारों को वो फिर दिल में उगायेगा।
कोई महावीर फिर होगा जमाने में नया पैदा।
नया इतिहास दुनियाँ में वो आकर फिर रचायेगा।

शायद ही

मेरे अन्दाज़ को शायद कोई पहिचानता होगा।
मैं अख़िर चीज़ क्या शायद ही कोई जानता होगा।
मैं रहता हूँ अँधेरे में दिया इल्जाम[1] दुनिया ने।
उजाला घर मेरा शायद ही कोई मानता होगा।

1. दोष

होकर के

अरे जीते सभी आदम[1] यहाँ मजबूर होकर के।
कोई बनकर भिखारी तो कोई मजदूर होकर के।
भले हों सेठ कोई या कोई मशहूर दुनिया में।
नहीं मिटता कभी मातम यहाँ मशहूर होकर के।

1. आदमी

ऐसा तो नहीं होता

सभी बेदर्द हों दुनिया में ऐसा तो नहीं होता।
मर्द ही मर्द हों दुनियाँ में ऐसा तो नहीं होता।
किसी को दर्द होता है मिटाता दर्द को कोई।
सभी हमदर्द हों दुनियाँ में ऐसा तो नहीं होता।

अरे कब तक

अरे कब तक दहकती आग पर जीवन गुजारोगे।
बहकते दिल थिरकते राग पर जीवन गुजारोगे।
महकती रात हो कितनी मगर काफूर[1] तो होगी।
अरे कब तक चतुर्गति भागकर जीवन गुजारोगे।

1. कपूर की तरह उड़ना

नये अरमान

अगर तामील[1] हो रब की तो बन जाते सभी आज़म[2]।
मगर तामीर[3] की ख़ातिर सितम सहते सभी आदम।
करो पैदा अरे दिल में नये अरमान अब अपने।
अगर हो अज़्म[4] दिल में तो बदल जायेगा ये आलम[5]।

1. आज्ञा का पालन 2. बहुत बड़ा महान 3. भवन निर्माण 4. सं. कल्प 5. संसार

छुपाकर

कसक दिल में छुपाकर आदमी खुशहाल दिखते हैं।
छुपाकर जेब में जैसे सभी रूमाल रखते हैं।
अगर आ जाये बालों में सफेदी आदमी के तो।
लगाकर बाल में मेंहदी वो काले बाल रखते हैं।

खुशहाल

सभी खुशहाल रहने को मशक्कत[1] खूब करते हैं।
मगर खुशहाल रहकर के बहुत कम लोग मरते हैं।
किसी को धन किसी को तन किसी को घर की है चिंता।
इन्हैं मरना ही पड़ता है ये मरने से तो डरते हैं।

1. परिश्रम

साथी

अगर गमगीन हो जीवन गुरु को याद कर लेना।
गुरु के आचरण से ज़िंदगी दिलशाद कर लेना।
गुरु जैसा न दुनिया में है कोई दूसरा साथी।
प्रभु मिल जायें उनसे गुरु की ही फरियाद कर लेना।

पैदाकर

नई खूबी नई रंगत नये अरमान पैदा कर।
कि अपने खाक के पुतले में तू भगवान पैदा कर।
जुदा होता है जो सबसे किया सामान वो पैदा।
जुदा न हो कभी तुझसे वही सामान पैदा कर।

ऐसा करो

करम ऐसा करो कि फिर करम करना न रह जाये।
धरम ऐसा करो कि फिर धरम करना न रह जाये।
सभी आते हैं दुनियाँ में सभी जाते हैं दुनिया से।
मरण ऐसा करो कि फिर कभी मरना न रह जाये।

बहादुर लोग

जो खुद को जीत लेते हैं बहादुर लोग होते हैं।
नहीं करते करम ऐसे कि जीवन में वो रोते हैं।
जिन्हें हरदम यहाँ खुद से बनी रहती शिकायत है।
वे अपनी जिंदगी में एक गम ही गम को ढोते हैं।

मिल गया होता

मुझे गुरुदेव गर तेरा सहारा मिल गया होता।
मैं सच कहता हूँ मंजिल का किनारा मिल गया होता।
समर्पित आपको गुरुवर कली जैसा मेरा जीवन।
परम आशीष मिल जाता तो गुल सा खिल गया होता।

आशीष

बहारें मुझको ठुकरायें नहीं इसका मुझे गम है।
तेरा आशीष सिर पर हो बहारों से भी क्या कम है।
अधूरी जिंदगी मेरी मुझे लगती यहाँ अच्छी।
अधूरी जिंदगी जब तक तू मेरे साथ हरदम है।

झूठे कवि

कोई बनकर कवि साहित्य ग़ैरों का चुराते हैं।
सुनाकर मंच पर कविता बड़ा दमखम दिखाते हैं।
ये झूठी शोहरतें पाकर समझते हैं बड़ा खुद को।
अरे झूठे कवि ऐसे माँ अम्बे को लजाते हैं।

सदा आशीष देता हूँ

सदा आशीष देता हूँ मैं उन सब नौजवानों को।
जो धरती पुत्र सीमा पर हैं छूते आसमानों को।
लिये फिरते हथेली पर जो अपनी जान को हरदम।
मगर हटते नहीं पीछे कभी डरकर मकानों को।

तनहा

यहाँ सब लोग तनहा[1] रह के ही जीवन बिताते हैं।
सभी तनहा ही आते हैं सभी तनहा ही जाते हैं।
मैं तन्हा हूँ मुझे इस बात का गम ना मेरे यारब।
इसी तन्हाई में तो हम तुम्हारे गीत गाते हैं।

1. अकेला

बचपना

जभी तक बचपना होता शरारत[1] खूब करते हैं।
जुबाँ से बोलते हैं कम इशारत[2] खूब करते हैं।
लिये फिरते हैं इक नन्हीं सी गुड़िया नन्हें हाथों में।
मगर नन्हें से दिल में वो असालत[3] खूब धरते हैं।

1. शैतानी 2. इशारे 3. असलियत

लोकप्रियता

न झूठी लोकप्रियता हो न सस्ती लोकप्रियता हो।
जो दे मन को तसल्ली ऐसी सच्ची लोकप्रियता हो।
करे जब याद कोई आँख से अश्कों[1] की हो वर्षा।
न होती जो फ़ना[2] दिल से वो ऐसी लोकप्रियता हो।

1. आँसुओं 2. नष्ट

खुशी मिलती है सेवा से

खुशी मिलती है सेवा से न मिलती आसमानों से।
खुशी मिलती नहीं भैया अरे झूठे बयानों से।
खुशी का माप करना है तो अपने आप से कर लो।
खुशी क्या चाहते हो मन के आतंकी ठिकानों से।

झूठे संस्कार

जो कवितायें चुराते सत्य को क्या बोल पायेंगे।
अरे वो सत्य को भी झूठ का धब्बा लगायेंगे।
कहा करते हैं मुझसे लोग बच्चे हैं अभी तो ये।
मगर संस्कार हों झूठे क्या सच्चे बन भी पायेंगे।

फुर्सत

किसे है धर्म की फुर्सत तिजारत[1] में जिया करते।
न पाते चैन पलभर भी खुशामद ही किया करते।
खुशामद ही खुशी इनकी प्रभु से वास्ता क्या है?
अरे ये लोग कर्मों की शिकायत ही किया करते।

1. व्यापार

प्रभु की अदालत

किया क्या तुमने वो प्रभु की अदालत में बताना है।
जमाने को नहीं अब तो स्वयं को आजमाना है।
अगर तुम चाहते प्रभु की अदालत में बरी होना।
तो अपनी ज़िंदगी भी अब असालत[1] में बिताना है।

1. असलियत

बेदर्द दुनिया

बड़ी बेदर्द है दुनिया न इसकी चाह तुम करना।
अगर न साथ दे कोई न अपनी आँख नम करना।
जमाने के उसूलों को समझना है बड़ा मुश्किल।
गर दिल टूट जाये तो न इसका कोई गम करना।

दस्तूर

अरे साईं यहाँ कब तक खुदा से दूर जाओगे।
खुदा से दूर रह कैसे खुदा का नूर पाओगे।
बिना झाँके अरे खुद में खुदा भी तो नहीं मिलता।
स्वयं में झाँकने का कब यहाँ दस्तूर पाओगे।

वही लगते मुझे अच्छे

जहाँ बरसात होती है नहाते हैं वहाँ बच्चे।
जहाँ सत्संग होता है भक्त आते वहाँ सच्चे।
मेरे यारब बताऊँ बात मैं दिल की तुम्हें अपने।
जो तेरे दर पे आते हैं वही लगते मुझे अच्छे।

जाओगे

अरे जब मौत आयेगी तो क्या लेकर के जाओगे।
जरा सोचो कमाया क्या है क्या खोकर के जाओगे।
यहाँ कोई हुआ महावीर कोई हो गया रावण।
कि तुम महावीर या रावण में क्या होकर के जाओगे।

इन्सान

अगर इन्सान बनना है तो भावों में नजाकत[1] ला।
दुखाना मत किसी का दिल तू जीवन में शराफत[2] ला।
खिले हैं बाग में गुल जो तुझे हरदम बुलाते हैं।
मगर पहले तू काँटों से भी जीवन में बगावत ला।

1. कोमल 2. सज्जनता

अनुभव

कोई खुशियाँ मनाते हैं कोई मातम मनाते हैं।
सभी की ज़िन्दगी में दिन यहाँ ऐसे भी आते हैं।
ठहरकर ज़िन्दगी जीना यहाँ तकदीर है किसकी।
पुराने लोग जीवन के यही अनुभव सुनाते हैं।

बेदर्द

यहाँ हर शख़्स के रिश्ते महकते दर्द हैं यारो।
छुपे हैं राख में शोले दहकते सर्द हैं यारो।
जो देते दान लाखों का गरीबों को सताते हैं।
वे दानी होके भी जग में बड़े बेदर्द हैं यारो।

हमने राज पाया है

मेरे यारब तेरे दर पे सुकूँ जो आज पाया है।
लगा ऐसा कि तुझ जैसा ही कुछ अन्दाज़ पाया है।
तमन्ना अब नहीं मुझको सितारों की बहारों की।
तुम्हें पाकर बहारों का भी हमने राज पाया है।

आतम धर्म

मुझे दर्पण समझकर के कभी तुम तोड़ मत देना।
किसी वीरान राहों पर अकेला छोड़ मत देना।
मैं आतम धर्म हूँ जिसको कभी महावीर ने चाहा।
समझकर नारियल मुझको कहीं तुम फोड़ मत देना।

सँभलकर

कभी दिखने में छोटे घाव भी नासूर[1] हो जाते।
जो खुद से दूर होते हैं खुदा से दूर हो जाते।
चला करते सँभलकर, जो प्रभु के पास रहते हैं।
तो उनके घाव छोटे भी स्वयं काफूर[2] हो जाते।

1. गहरा घाव, व्रण 2. कर्पूर

पैगाम

न सोचा था मेरे यारब कि यूँ आराम पायेंगे।
तुम्हैं अपने हृदय में हम सुबह औ शाम पायेंगे।
भुला देंगे जमाने को, कभी जैसे मिले न हों।
हृदय में एक समता के नये पैगाम पायेंगे।

अगर

अगर कश्ती समुन्दर में तिराना चाहते हो तुम।
अगर जीवन को मस्ती में बिताना चाहते हो तुम।
बढ़ा लो आज से नजदीकियाँ गुरुदेव से अपनी।
अगर मर करके भी सच्चा ठिकाना चाहते हो तुम।

सब याद करते हैं

जो खिलते हैं गुलों जैसे उन्हें सब याद करते हैं।
महकते हैं फलों जैसे सभी फरियाद करते हैं।
जिन्हें गम की हवाओं ने छुआ न आज तक यारो।
वही रोते हुये हर शख़्स को दिलशाद[1] करते हैं।

1. प्रसन्न

स्वागत

करो स्वागत बहारों का कहीं वो रूठ न जायें।
नज़र के सामने आकर नज़र से छूट न जायें।
बहारों पर लगी नज़रें हजारों दुनियाँ वालों की।
कहीं कोई नजर आकर बहारें लूट न जायें।

सब चाहते हैं

कोई पतवार ले टूटी समुन्दर चाहते तरना।
कोई कागज के फूलों से ही झोली चाहते भरना।
यहाँ सब चाहते हैं स्वर्ग का सुख हमको मिल जाये।
मगर इस स्वर्ग की ख़ातिर नहीं वो चाहते मरना।

प्यासे

कभी सर्दी, कभी गर्मी ये मौसम के नजारे हैं।
किसी के पास है दौलत कोई किस्मत के मारे हैं।
बुझा लेते हैं अपनी प्यास जाकर कूप पर कोई।
मगर प्यासे वही रहते जो दरिया के किनारे हैं।

हर्ष

कोई जागीर[1] पाकर के भी खुशियों को तरसता है।
कोई अक्सीर[2] पाकर के भी खुशियों को तरसता है।
जिन्हैं जागीर से अक्सीर से मतलब नहीं कोई।
उन्हैं गुरुदेव मिल जायें खुशी से मन हरषता है।

1. राज्य की ओर से मिली भूमि 2. दवा

आ जाये

खुशी की चाह हो दिल में गुरुचरणों में आ जाओ।
गमों की आह हो दिल में गुरुचरणों में आ जाओ।
तमन्ना है अगर दिल में मिलें महावीर सी राहें।
मिलेंगी हर तरफ राहें गुरुचरणों में आ जाओ।

अगर इन्सान हो जाये

अरे दुनियाँ का हर आदम अगर इन्सान हो जाये।
तो सच कहता हूँ धरती का वही भगवान हो जाये।
जहाँ मुर्दे दफ़न होते या जलते हैं जहाँ मुर्दे।
अरे इक दिन वो कब्रिस्तान या शमसान रो जाये।

गुरु का नाम

अरे जिस शख़्स के लब[1] पे गुरु का नाम होता है।
वो अपनी ज़िन्दगी में हर कदम पर पुण्य बोता है।
कहें क्या बात बन्दे की, अरे हम इस जमाने में।
जो गुरु का हो गया जग में वही भगवान होता है।

1. होंठ

चाहता क्या है?

न जाने आदमी धन को कमाकर चाहता क्या है?
निरन्तर चैन खुद अपना गँवाकर चाहता क्या है?
सभी को एक दिन जलना है मरघट पे अकेले ही।
ये रोशन ज़िंदगी अपनी बुझाकर चाहता क्या है?

शेखचिल्ली

यहाँ जो शख़्स धन के ही नशे में चूर होते हैं।
तड़पती लालसा के सामने मजबूर होते हैं।
कसम खाते हैं ये झूठी करम करते हैं ये खोटे।
जहाँ में शेखचिल्ली नाम से मशहूर होते हैं।

गुरु शरण

अगर मिट्टी से जीवन को दिया[1] जैसा जलाना हो।
अगर रोते हुए मन को गुलों जैसा खिलाना हो।
तो आ गुरु की शरण पाले लगा ले धूल चरणों की।
अगर टूटी हुई किश्ती किनारे से लगाना हो।

1. दीपक

प्रेम का झरना

जलाओ ज्ञान का दीपक अगर किस्मत बनाना हो।
चलो उस राह पे हरदम जहाँ अद्‌भुत खज़ाना हो।
न लूटे कोई दुनियाँ में न छूटे कुछ भी दुनियाँ में।
बहाओ प्रेम का झरना अगर सुख शान्ति पाना हो।

मिल गया हमको

गुरु मिल जायें तो समझो जमाना मिल गया हमको।
जिसे हम गायें दिल से वो तराना मिल गया हमको।
गुरु जैसी न दुनिया में कोई अक्सीर[1] होती है।
चरण की धूल मिल जाये खज़ाना मिल गया हमको।

1. दवा

गुरु का आशीष

अगर जीवन की कश्ती को गुरु पतवार बन जायें।
मिलाता जो मुझे मुझसे गुरु वह द्वार बन जायें।
गुरु आशीष से ऊँचा नहीं कोई हिमालय है।
गुरु का हाथ सिर पे हो खुशी जीवन की मिल जाये।

गुरु भक्ति

अगर किस्मत परखना हो करो पैदा गुरु भक्ति।
परिन्दों सा चहकना हो करो पैदा गुरु भक्ति।
जमाने में कभी चलकर गुरु के साथ भी देखो।
अगर महावीर बनना हो करो पैदा गुरु भक्ति।

जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन

के अंतर्गत

जिनागम पंथ ग्रंथमाला

उद्देश्य

मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार
एवं लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का
निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा

प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महामुनिराज

स्थापना ग्रंथमाला : 15 नवम्बर 2018, विमर्श उत्सव

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)

भावलिंगी संत एक नजर...

आओ परिचय करें गुरुदेव की विचार वीथियों में सजे चिन्तन के ओजदार मोतियों से.....

- परम पूज्य भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज एक ऐसे दिगम्बराचार्य हैं जिन्होंने पंथवाद के नाम पर बिखरती जैन समाज में अनादि-अनिधन 'जिनागम पंथ' का उद्घोष कर सामाजिक एकता का सूत्रपात किया है।
- जिनको सिद्धक्षेत्र अहारजी में अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम, शान्तिमक्ति की महान् सिद्धि प्राप्त हुई, वक्षों द्वारा की गई महापूजा, और नाम दिया 'भावलिंगी संत एवं अहारजी के छोटे बाबा'।
- आचार्य भगवन् अमितगति स्वामी के 1000 वर्ष प्राचीन ग्रंथ "श्री योगसार प्राभृत" ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राकृत भाषा में "अप्पोदया"/ "आत्मोदया" नामक वृहद टीका का सृजन किया गया है जो अपने आप में अनूठा इतिहास है।
- धर्म निरपेक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत वर्ष में गुनगुनाई जाने वाली कालजयी रचना "जीवन है पानी की बूँद" महाकाव्य के पूज्यश्री मूल रचनाकार हैं। इस कृति में गुरुदेव द्वारा अभी तक 5000 से अधिक छंदों का सृजन किया गया है। गुरुदेव की इस कृति पर अनेक साधु-साध्वियों द्वारा नये-नये छंद जोड़े गये।
- परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिनकी रचना 'देश और धर्म के लिये जियो' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक 'मकरंद' में प्रकाशित किया गया है।
- परम पूज्य भावलिंगी संत ऐसे प्रथम जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से पूर्णत: नवीन 'विमर्श एम्बिशा' भाषा का सृजन कर समस्त भाषा मनीषियों को प्रभावित किया है।
- परम पूज्य गुरुदेव ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से सन् 2011 अशोक नगर (म.प्र.) में 'विमर्श लिपि' का सृजन किया है।
- देश की राष्ट्रवादी संस्था 'भारत विकास परिषद्' शाखा बिजयनगर (राज.) द्वारा गुरुदेव को 'राष्ट्रयोगी' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

वर्तमान श्रमण संस्था में पूज्य गुरुदेव के संघ का अनुशासन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

जिनागम पंथी पुण्यार्जक परिवार

श्रीमान बिजेन्द्र कुसुम जैन श्रीमान आशीष छवि जैन, पुत्री-अक्षी जैन, पुत्र-सक्षम जैन

गुलमोहर एन्क्लेव, नेहरू नगर, गाजियाबाद

कहो गर्व से हम जिनागम पंथी हैं।

जिनागम पंथ प्रकाशन

...शास्त्र विक्रय... ज्ञानावरणस्यास्रवाः
शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है।
(आचार्य अकलंक देव, राजवार्तिक)

NOT FOR SALE